

## छायावादी काव्य में सौन्दर्य एवं प्रेम की भावना

आधुनिक काल में छायावादी काव्य की प्रवृत्तियों में सौन्दर्य एवं प्रेम की भावना प्रमुखता से रही है। इस बात के कवियों सौन्दर्य एवं प्रेम के उदात्त भाव को अपने साहित्यिक रचनाओं में समाहित किया है। इसमें सूक्ष्म सौन्दर्य की प्रतिष्ठा व्यापक पैमाने पर हुई। अमूर्त अशरीरी सौन्दर्य प्रियता छायावादी कवि को अधिक प्रिय थी। इस सौन्दर्यप्रियता एवं सौन्दर्यबोध स्थिति को प्रकट निम्नानुसार के माध्यम से भी व्यक्त किया गया है। प्रकृति में चेतना-आरोप, मानवीकरण, विस्मय की प्रकृति, मानव-अनुभूतियों की अजिज्ञाप्ति, स्तब्धता के स्वर का समावेश आदि सौन्दर्य भावना के अंतर्गत आते हैं। उदाहरण —

"देखना हूँ जब उपवन  
फिजालों में कुलों के  
फिजे, भर-भर अपना चौकन  
पिलाता है मधुकर को।"

सौन्दर्य भावना के अंतर्गत नारी-सौन्दर्य की झलक भी मिलती है, साथ ही पुरुष-सौन्दर्य का चित्रण भी मिलता है जहाँ नारी के अशरीरी सौन्दर्य से महत्व दिया गया है वहीं पुरुष के स्थूल सौन्दर्य का चित्रण भी है —

"शशि मुख पर चूँचर डाले हँचल में दीप दिया  
जीवन की गोधूली में झोंकल से तुम आए।"

प्रेम का विकास भी विविध रूपों में कल काल की अजिज्ञाप्ति रही है। प्रकृति-प्रेम, नारी-प्रेम, मानव-प्रेम, शिशु-प्रेम, अज्ञात-प्रियतम के प्रति प्रेम आदि के माध्यम से इस काल के कालों के प्रेम चित्रण में वास्तव का पूर्ण भ्रमक तथा हृदय की कोमल कृतियों की पूर्ण अजिज्ञाप्ति है। असाद और महादेवी वर्मा के काल में प्रेम भावना अमतिशय विकास हुआ है। महादेवी वर्मा की अज्ञात-प्रियतम के प्रति प्रेमनिवेदन इसी रहस्यमयी भावना के अंतर्गत प्रेम भावना से हैं —

"मैं कण-कण में ढाल रही हूँ आँसू के मिस प्यार खीस  
मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना तुझमें खिली सा।"



## प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कथा-साहित्य

इस काल की कहानियों में अथार्थवादी मनोवैज्ञानिक मनोविश्लेषणात्मक, प्रभाववादी तथा स्वाभाविक अथार्थवादी परंपरा को लेकर कथा शिल्प अग्रसर हुआ।

1. अथार्थवादी कहानियों की परंपरा :- इस परंपरा के प्रतिष्ठापक पाण्डेय केचन शर्मा ठेका हैं। इन्होंने कहानी के क्षेत्र में एक नई चेतना की जागरूक किया। राजनीतिक, स्वाभाविक, लुटि परंपरा एवं अंधविश्वासों पर खुलकर प्रहार किया और अज्ञानतावशीय छोटी आदर्शवादी परंपरा को विन्न-विन्न कर स्वाभाविक कुरीतियों तथा अपराधों का अति अथार्थ वर्णन किया। इनके अतिमग्न अथार्थवादी स्वर लयें, कटाक्ष एवं क्रांति से भरे हैं। 'दो जख्म भी डारंग', 'चिंगारियाँ' तथा 'बलात्कार' इनके कहानी संग्रह हैं। इसके बाद आचार्य चतुर्सेन ब्राह्मी का भी स्थान होता है। इन्होंने स्वाभाविक कुरीतियों एवं पाखण्डों के अदृष्टांत के साथ साथ कभी-कभी अश्लीलता का भी दिखाया है। 'रजकपा' और 'अबन ब्राह्मी जी की कहानियों' से लैराह हैं।

2. मनोवैज्ञानिक कहानियों की परंपरा :- इस परंपरा के प्रमुख प्रतिष्ठापक हैं - नौनेन्द्र कुमार। इन्होंने जीवन-दृष्टि को मनो-वैज्ञानिक आविष्कार पर स्थापित किया। इनकी प्रमुख कहानी संग्रह हैं - बलाघ्न, स्पर्धा, झोली, पाजेब, जयसंधि, एक रात, दो चिड़िया आदि। इस परंपरा के अन्य कथाकार हैं - लियाराजशरण गुप्त। इन्होंने कहानियों में कोमल भावनाओं का चित्रण आकर्षण शैली में किया है। इनकी एक ही कहानी संग्रह है - मानुषी।

3. मनोविश्लेषणात्मक कहानियों की परंपरा :- इस परंपरा के प्रवर्तन आनंद और इलान्चंद्र जोशी हैं। इनकी सभी कहानियाँ कोशक के सहागी मनोविश्लेषणात्मक लेखों पर आधारित हैं। त्रिपथगा, परंपरा और की बात और जयदेव इनकी प्रमुख कहानी संग्रह हैं।



इमचंद्र जोशी जी ने श्री अपनी कथा में इसी परंपरा को आधार बनाया है। रोमोरिक धारा आहुति, होली, दीवाली इनकी प्रमुख कथा संग्रह हैं। इस परंपरा के अन्य कथाकार हैं - नाथिनिलोचन शर्मा, भगवती-चरण वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, बहाड़ी तथा नरोत्तम नागर हैं।

4. सामाजिक मर्यादावादी कहानियों की परंपरा :- इस परंपरा की शुरुआत इमचंद्र जी ने किया, किन्तु इसे आभिनव स्वरूप देने का श्रेय प्रशांत जी को है। वे मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित थे। इनके कहानी संग्रह हैं - पिंजरे की उड़ान, अभिशप्त, आहुतियाँ, ज्ञानदान, लड़कियों का लफ्फा, भस्मावृत चिनगारी, झूलों का कुरता, धर्म युद्ध, उत्तराधिकारी, चिन का शीर्षक आदि। उन्होंने अपने कहानियों में समाज के दुर्दशाओं की कटु आलोचना की है। इस परंपरा की कहानी लेखिकाओं में होमवती देवी तथा कमला देवी चौधरानी के नाम उल्लेखनीय हैं।